गूजरात विद्यापीठ के "यूनिवर्सल हिलींग प्रोग्राम" केंद्र के नवनिर्मित भवन के लोकार्पण समारोह में गुजरात के माननीय राज्यपाल श्री ओ. पी. कोहली जी का संबोधन। (दिनांक २१ अप्रैल, २०१८)

- आज गुजरात विद्यापीठ के परिसर में Universal Healing Programme केंद्र का विधिवत् उदघाटन हुआ है। जिस केंद्र का लाभ आनेवाले दिनो में सभी जरूरतमंद लोग ले सकेंगे।

- डॉ. रमेश कापडिया जी ह्रदय रोग के विख्यात चिकित्सक है। उनका ज़ोर इस बात पर है कि रोग के उपचार के बजाय उसके रोकने पर बल दिया जाये। हम लोग बीमार होने पर बीमारी के इलाज में लगते है मगर बीमार होने के पहले जो सावधानी बरतनी चाहिए उसकी तरफ हमें जितना ध्यान देना चाहिए उतना ध्यान हम नहीं देते है। ह्रदय रोग एक ऐसी बीमारी है जिसका नाम सुनते ही आदमी डर जाता है। ये भयानक बीमारी है जो जानलेवा है। ऐसी स्थिति में ह्रदय रोग से बचाने के लिए क्या उपाय करने चाहिये, इसकी जानकारी डॉ. रमेश कापडियाने अपनी पुस्तक में लिखी है। ये खुशी की बात है की जहां-जहां इस प्रकार के कार्यक्रम होते हैं वहाँ- वहाँ डॉ. कापडिया इस रोग के बारे में जानकारियां देते रहते है।

- महात्मा गांधीजी ने प्राकृतिक चिकित्सा एवं कुदरती उपचार पद्धति पर ज़ोर दिया था। साथ-साथ में इस पद्धति को उन्होंने अपने तथा अपने परिवारजनों तथा आश्रमवासियों पर आज़माया था। उनके मुताबिक प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति का बुनियादी सिद्धांत यह है की हम लोग अप्राकृतिक जीवन न जियें। आज हमारी जीवनशैली प्राकृतिक जीवनशैली से बिलकुल विपरीत है। इससे हम कई रोगों के शिकार हो जाते है। इन परिस्थितियों में पूज्य गांधीजी की कुदरती उपचार की पद्धति आज पहले से भी अधिक प्रासंगिक है तथा जरूरी है। डॉ. रमेश कापडिया जी ने अपने Universal Healing Programme के अंतर्गत पूज्य गांधीजी की प्राकृतिक पद्धति के सिद्धांतो का समावेश किया है।
- आज के युग की सबसे महत्वपूर्ण और जटिल समस्या है तनाव प्रबंधन। हमारे यहाँ परंपरा से सीधी-सादी प्राकृतिक परिस्थितियों में लोग जीते थे जिसमें प्रकृति से सामंजस्य रखकर जीने की बात प्रमुख थी। उस पद्धति से हटकर आधुनिकता के नाम पर आज हम कृत्रिम जीवनशैली की ओर बढ़ गए है। ये गलत है और इसमें सुधार लाने के बारे में हमें सोचना चाहिये।
- इसी मंच से आज कहा गया कि हमें परंपरागत पद्धतियों तथा आधुनिक विज्ञान के बीच सामंजस्य स्थापित करना चाहिये। आधुनिक मेडिकल सायन्स यह कहता

है कि केवल आधुनिक विज्ञान से काम नहीं चल सकता। इसमें परंपरागत ज्ञान भी शामिल होना चाहिये। हमें खुशी है की डॉ. रमेश कापड़िया के Universal Healing Programme में इसी सही दिशा का निर्देश हुआ है। हाई ब्लड प्रेशर, हाई कोलेस्ट्रॉल, तंबाकू का सेवन, मधुमेह, तनाव ये सभी आज के विश्व में प्रमुख रोग है। इन रोगों से बचने के लिए हमें अपनी जीवनशैली में कैसा बदलाव लाना पड़ेगा इसका मार्गदर्शन Universal Healing Programme का आज से शुरू हो रहा यह केंद्र हम सभी को देगा। इस मार्गदर्शन में सरल जीवनचर्या की बात भी आएगी। उचित मात्रा में खाना, क्या खाना, क्या नहीं खाना, समय पर सोना, हल्का व्यायाम करना ये सब बाते Holistic Approach में आती है ।

- हमारे समाज में भिन्न-भिन्न बीमारीयों के बारे में लोगों में जागृति बहुत कम है। छोटी-छोटी बातें जिनका ध्यान रखकर हम स्वस्थ जीवन कैसे जियें इसका चुनाव कर सकते हैं पर यह होता नहीं है। मेरा तो सुझाव यह भी है की Diabetes Management, Blood Management इत्यादि विषयों पर प्राथमिक जानकारी हमारे पाठ्यपुस्तकों में दी जानी चाहिये। हमारे शिक्षा मंत्रालय को इस दिशा में ध्यान देने की आवश्यकता है।

- पूज्य गांधीजी ने कहा था कि सबसे अच्छा कोई धर्म है तो वह मानवसेवा का है । उनके द्वारा स्थापित की गई गुजरात विद्यापीठ के परिसर में Universal Healing Programme केंद्र का स्थापित होना बहुत ही प्रासंगिक है । हमारे यहाँ कहा गया है कि - "शरीरमाद्य खलु धर्म साधनम् ।" जिसका अर्थ है हमारा शरीर धर्म पालन का पहला साधन है । दूसरे शब्दों में कहे तो धर्म का आचरण करने के लिए भी स्वस्थ शरीर का होना जरूरी है। अगर शरीर स्वस्थ नहीं है तो धर्म का आचरण भी नहीं हो सकता है। इस दृष्टि से भी शरीर को हमेशा स्वस्थ रखने के लिए बहुत सी छोटी-छोटी लेकिन महत्वपूर्ण बाते हमें ध्यान में रखनी चाहिये।
- डॉ. रमेश कापडिया ऐसी छोटी-छोटी महत्व की बाते बताते है जो सुनने में तो साधारण लगती है मगर वास्तव में बहुत ही मूल्यवान है। वे कई वर्षों से मानवसेवा के कार्य में लगे हुये है। मेरी शुभकामना है कि भगवान उनको दीर्घायु दे। आज जिस सेन्टर का उद्घाटन हुआ है, यह सेन्टर गांधीजी के आदर्शो के अनुरूप सेवा को ही सबसे बड़ा धर्म मानकर अपने उद्देश्य की पूर्ति करने में सफलता प्राप्त करे ऐसी मेरी शुभकामना है। इस अवसर पर मैं आयोजकों को भी बहुत बहुत बधाई देता हूँ। धन्यवाद। जय हिन्द।